

डॉ. केनेथ मैथ्यूजः उत्पत्तिः सत्र ८८ यूसुफ और याकूब का पुनर्मलिनः उत्पत्तिः ८९

© 2024 केनेथ मैथ्यूज और टेड हलिडेब्रांटे

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज हैं और उत्पत्तिकी पुस्तक पर उनकी शकिषाएँ हैं। यह सत्र 24 है, जोसेफ और जैकब का पुनर्मलिन, उत्पत्ती 46-47।

पाठ 24 का शीर्षक है जोसेफ और जैकब का पुनर्मलिन, अध्याय 46 और 47।

उत्पत्तिके अंतिम पाँच अध्याय, यानी 46 से लेकर 50 तक, पुस्तक का अंतिम अध्याय, वास्तव में दो नषिकरणों का वलिय है। यूसुफ की कहानी, जो अध्याय 37, श्लोक 2 में शुरू हुई थी, यहाँ अध्याय 46 और 47 में यूसुफ और उसके पाता याकूब के मलिन के साथ समाप्त होती है। और याकूब की कहानी अध्याय 48 से 52, 50 में समाप्त होती है।

और मैं इसे स्पष्ट कर दूँ क्योंकि यदि आप हमारी पुस्तक को टैक करने के तरीके का अनुसरण कर रहे हैं, तो हमने पीढ़ियों में इस आवर्ती अभिव्यक्ति को पाया है, और हबिरु में अभिव्यक्ति टोलेडोथ है, और आपके संस्करण कहेंगे के खाते में, या के खाते में, या की कहानी में। यह जैकब के लिए अध्याय 25 में जैकब और एसाव के जनम के साथ शुरू होता है। और फरि अगला टोलेडोथ अभिव्यक्ति अध्याय 37 में जैकब, जोसेफ खाते के साथ शुरू हुआ।

तो, हम कैसे पाते हैं कयाकूब की कहानी जारी है? और ऐसा इसलिए है क्योंकि, यूसुफ के वविरण में, हमारे पास तीन प्राथमिक पात्र हैं, यूसुफ और फरि याकूब। यूसुफ की कहानी में याकूब एक प्रमुख पात्र है, और जब हम अंतिम तीन अध्यायों, 48 से 50 को देखते हैं तो वह और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। तीसरा पात्र यूसुफ के वविरण के माध्यम से उभरता है, और फरि वह याकूब के नषिकरण में दिखाई देता है, जो यहूदा है।

अब, हम पाएंगे कि इन अंतिम पाँच अध्यायों में आशीर्वाद का बार-बार उल्लेख है। उदाहरण के लिए, अध्याय 48, 49 और 50 में, यह लगातार दिखाई देता है। उदाहरण के लिए, अध्याय 48 में, याकूब द्वारा यूसुफ के दो बेटों को आशीर्वाद दिया गया, और वे मनश्शे और एप्रैम होंगे।

और फरि, अध्याय 49 में, आपको कमोबेश याकूब द्वारा याकूब के बेटों को फरि से मृत्युशय्या पर आशीर्वाद दिया गया है। और इसलिए अकेले, और अध्याय 50 जैसे अन्य स्थानों में, आशीर्वाद का वचिार आवर्ती है और साथ ही शब्द भी। इसलिए, अगर हम इन पाँच अध्यायों को देखें, और आज हम अध्याय 46 और 47 में यूसुफ की कहानी का नषिकरण निकालने जा रहे हैं, लेकिन जब आप पाँचों को देखते हैं, तो हमें कुलपिताओं को आशीर्वाद की आंशिक पूर्ति की याद दलाते हैं।

याद रखें, यह वषिय है, परमेश्वर के सृजति उद्देश्यों का आवर्ती वषिय। प्रतजिजापूर्ण आशीर्षों के बारे में सबसे पहले उत्पत्ति अध्याय 1 में बात की गई थी। और आपको याद होगा कि उत्पत्ति अध्याय 1 में, हमारे पास बार-बार आशीष का वचिार था। तो यह

पुस्तक का अंत होगा, जैसा क कहिा जाता है, आशीष से शुरू होकर आशीष के साथ समाप्त होता है।

लेकिन आशीरवाद केवल आंशिक रूप से पूरे होते हैं, लेकिन आपको यह याद रखना चाहिए कि कुलपति परविर मसिर में हैं, वे अभी तक कनान की वादा की गई भूमि में नहीं हैं। इसलिए, परिणामस्वरूप, ये अंतिम अध्याय दिखाते हैं कि हमने पुस्तक में क्या पाया, और यह भविष्य की ओर एक अभिविन्यास है। और यह उचित है, है न? क्योंकि वादे अब्राहम और उसके तत्काल उत्तराधिकारियों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि अब्राहम परिवार के सभी वंशजों के लिए हैं।

और इसलिए यह अभिविन्यास, दूरदर्शी पहलू है जो पूरी कतिब में बार-बार स्पष्ट रूप से या सूक्ष्म रूप से देखा जाता है। यही एक कारण है कि वंशावली में आपकी प्रमुखता है। एक और विचार जो हम पाएंगे वह यह है कि परमेश्वर का संप्रभु उद्देश्य बाधाओं के बावजूद, रास्ते में आने वाली कठिनाइयों के बावजूद जारी रहता है।

हमने पाया है कि यह बगीचे से लेकर अध्याय 50 तक जारी रहता है। इसलिए, अकाल की समस्या याकूब के परिवार द्वारा की गई तीन यात्राओं को समझने के लिए पृष्ठभूमि का काम करती है। पहले भाई अध्याय 42 में जाते हैं, और फिर उनकी दूसरी यात्रा अध्याय 43 से 45 में होती है।

आज, हम तीसरी यात्रा पर नज़र डालेंगे, जो याकूब और उसके पूरे परिवार और रशितेदारों का प्रवास है। इसलिए, जब हम अध्याय 46 से शुरू करते हैं, तो हमें याद होगा कि पिछले अध्यायों में, यूसुफ द्वारा अपनी पहचान के प्रकटीकरण का वर्णन है, और फिर वह अपने चौके हुए, परेशान भाइयों को शांति प्रदान करता है, और सुलह होती है। फिर, वह उन्हें याकूब को उसके जीवित रहने और याकूब के प्रवास के लिए उठाए जाने वाले कदमों के बारे में बताने के लिए वापस भेजता है।

इसलिए, अध्याय 45 के अंत में, श्लोक 28 में, यूसुफ अंततः विश्वास करता है, और श्लोक 28 में, आपके पास प्रतिसि्थापन इस्राएल है। इस्राएल ने कहा, मैं आश्वस्त हूँ। इसलिए, वह भाइयों द्वारा आश्वस्त है।

आखरिकार, वे पहले भी झूठ बोल चुके थे। उसे इस बात पर संदेह था। और अब, उनके पास क्या छुपा है? और इसलिए आखरिकार वह सहमत हो जाता है, और वह अंत में कहता है, मेरा बेटा जोसेफ अभी भी जीवित है।

मैं मरने से पहले जाकर उससे मलिंगा। तो, चलिए अध्याय 46 की आयत 1 से 27 में मसिर की ओर पलायन से शुरू करते हैं। यह हमें, मसिर की ओर पलायन, हबिरू लोगों की चल रही कहानी के लिए तैयार करेगा जो लगभग 400 साल बाद मसिर में गुलाम बनाए गए थे, और फिर मसिर से उनका पलायन और उनकी सभी समस्याओं के साथ कनान की ओर लंबी यात्रा।

और इसलिए, जब आप नरिगमन की कहानी को देखते हैं, जैसे अगर आप सुन सकते हैं या अध्याय 1 में देख सकते हैं, तो उत्पत्ता के अंत में जो हम पा रहे हैं उसका एक पछिला संदर्भ है।

और यह नरिगमन अध्याय 1 की आयत 5 में कहता है कथिकूब के वंशजों की कुल संख्या 70 थी। यूसुफ पहले से ही मसिर में था।

अब यूसुफ और उसके सभी भाई और उस पीढ़ी के सभी लोग मर गए। लेकिन इसराएली, और यहाँ अध्याय 1 श्लोक 28 की परतधिवर्ना है, लेकिन इसराएली फलने-फूलने लगे और बहुत बढ़ गए और बहुत अधिक संख्या में हो गए, यहाँ तक कि देश उनसे भर गया। फिर, एक नया राजा जो यूसुफ के बारे में नहीं जानता था, मसिर में सत्ता में आया।

इसलिए, नरिगमन को पूरी तरह से समझने के लिए, उत्पत्ति में वर्णन कुलपत्तियों की कहानी जानना सहायक है। इसलिए, याकूब का वंश 1 से 7 तक की आयतों में शुरू होता है। आयत 1, इसलिए इसराएल ने अपनी सारी संपत्ति लेकर प्रस्थान किया, और यह महत्वपूर्ण होने जा रहा है, इसे दोहराया जाने वाला है, सब कुछ। दूसरे शब्दों में, परिवार के वंशजों की कुल संपत्ति, उसकी सारी संपत्ति, एकत्रित की गई और पलायन किया गया, मसिर ले जाया गया।

तो, यह समावेशी है। और इसलिए, याकूब और उसके परिवार का अस्तित्व समावेशी है। उसके बेटों या उसके किसी भी बेटे के वंशज पीछे नहीं छूटे।

इसलिए, जब वह बेरशेबा पहुंचा, तो उसने अपने पति इसहाक के परमेश्वर को बलि चढ़ाई। इसलिए, जब वह दक्षिण की ओर अपनी यात्रा पर निकला और बेरशेबा पहुंचा, तो वह आराधना करने के लिए प्रभु के सामने आया। मुझे लगता है कि यात्रा कार्यक्रम हमारे लिए याद रखना महत्वपूर्ण है क्योंकि आपको याद होगा कि अध्याय 28 में, आपको रात के सपने की घटना, स्वर्ग से पृथ्वी तक फैली सीढ़ी का दर्शन है।

और वहाँ परमेश्वर याकूब के सामने प्रकट हुआ, और उसने उस स्थान का नाम बेथेल रखा। अध्याय 28 में एक वादा है, जिसमें कहा गया है, मैं तुम्हें इस देश में वापस ले आऊंगा, यही वादा कहता है। और फिर बेथेल लौटने की घोषणा अध्याय 31 में पाई जाती है।

तो, फिर वह आगे बढ़ता है, जैसा कि उत्पत्ति की कहानी में बताया गया है, वह पददमन अराम को छोड़ देता है। यह भूमि के बाहर है। यह वादा किए गए देश के उत्तर-पूर्व में है।

और वह बेथेल चला गया। और फिर हम यह पुनर्निर्माण कर सकते हैं कि वह बेथेल से दक्षिण की ओर कुलपति मसिर में चला गया, आप कह सकते हैं, एक जगह जहाँ अब्राहम और इसहाक, और साथ ही, हम जैकब के साथ पाएंगे, हेबरोन को एक ऐसे कषेत्र के रूप में पाते हैं जहाँ उन्होंने बहुत समय बिताया और वहाँ बस गए। हेबरोन से आगे बेरशेबा तक, आगे दक्षिण में, बेरशेबा से मसिर में उतरने के लिए यह बहुत दूर नहीं है।

सेडाइक में यही पाते हैं। मूसा ने प्रभु से कहा, हम संभवतः सुनिई पर्वत को छोड़कर, जंगल से होकर यात्रा करके, और केनान में सुरक्षित रूप से नहीं पहुँच सकते, जब तक कि आप हमारे साथ न चले।

और मुझे लगता है कि याकूब के मामले में भी यही बात ध्यान में रखी जा रही है। लेकिन, जैसा कि हमने अध्याय 26, श्लोक 2 में इसहाक के बारे में पढ़ा, वहाँ अकाल पड़ा है। लेकिन प्रभु ने इसहाक से कहा, मसिर में मत जाओ, जहाँ हो वहीं रहो; यह गरार के कषेत्र में था, जो पलाशियों का एक शहर-राज्य था।

वहाँ रहो, और मैं तुम्हारे साथ रहूँगा, तुम समृद्ध होगे, और डरो मत। तो यहाँ हम इस दर्शन में

हैं, श्लोक 2, और तुम्हारे पास परमेश्वर का आह्वान है। याकूब, याकूब, मैं यहाँ हूँ, उसने उत्तर दिया।

मुझे आश्चर्य है कि क्या आपके दमिग में पहले की कहानियों से 'मैं यहाँ हूँ' गुंज रहा है। और जिस पर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ वह है अध्याय 22, श्लोक 1। और यहीं पर अब्राहम को परमेश्वर में अपने विश्वास की महान परीक्षा का सामना करना पड़ता है क्योंकि परमेश्वर उसे अपने बेटे, अपने सबसे प्रिय बेटे, इस अद्वितीय व्यक्ति को जो वादा को बेटा है, उसे मोरिया पर्वत पर ले जाने और वहाँ उसे पूजा में एक मानव बलि के रूप में चढ़ाने का कार्य सौंपता है। तो यह इस तरह से शुरू होता है।

अब्राहम कहता है, मैं यहाँ हूँ। और फिर, जब अब्राहम अपने बेटे को बलि के रूप में चाकू घोंपने वाला होता है, तो प्रभु का दूत कहता है, अब्राहम, अब्राहम, और अब्राहम जवाब देता है, मैं यहाँ हूँ। तो यहाँ हमारे मन में वह प्रतिध्वनि है जब याकूब जवाब देता है, मैं यहाँ हूँ।

यह, इन अंतमि अध्यायों में अन्य अवसरों के साथ, उन सभी प्रतिज्ञापूर्ण आशीषों को सामने लाता है जो अध्याय 12 में अब्राहम को दी गई थीं, इसहाक को दोहराई गईं, और याकूब को दोहराई गईं। तो, इस अगले श्लोक 3 में, हमें यह पहचान मिलती है कि परमेश्वर कौन है। यह स्पष्ट रूप से, उस समय की बहुदेववादी संस्कृति में बहुत महत्वपूर्ण है।

लेकिन साथ ही, अब्राहम के वंशजों के लिए किए गए वादों के संबंध को भी सामने लाना है। मैं ईश्वर हूँ, तुम्हारे पिता का ईश्वर, उसने कहा। अब, हम पिता को इसहाक के संदर्भ में ले सकते हैं, लेकिन पिता कभी-कभी किसी पूर्वज का संदर्भ भी होता है।

और इसलिए, यह इसहाक हो सकता है या यह उसके पूर्वज अब्राहम का भी संदर्भ हो सकता है। मसिर जाने से मत डरो। खैर, बार-बार, बार-बार, बार-बार, हमें ऐसे कई मौके मिलेंगे जहाँ प्रभु प्रकट होंगे, स्वर्गदूत प्रभु इन शुरुआती पाँच पुस्तकों में प्रकट होंगे।

और परमेश्वर कहता है, या देवदूत कहेगा, डरो मत, डरो मत, डरो मत। और ऐसा इसलिए है क्योंकि वह चाहता है, यानी प्रभु, उस व्यक्ति को आश्वस्त करना जिसके सामने वह खुद को प्रकट करता है, यह आश्वस्त करना कि उसका प्रकट होना एक सुखद प्रकार का है। कहीं भी वादा और सक्षमता को प्रकट होना नहीं है।

यह इस प्रकार कहता है, मसिर जाने से मत डरो, क्योंकि मैं तुम्हें वहाँ एक महान राष्ट्र बनाऊँगा। और हमने देखा कि जब हम नरिगमन पढ़ते हैं, तो मैं तुम्हारे साथ मसिर जाऊँगा। यह बेतेल में याकूब से किए गए वादे की पुनरावृत्ति है।

मैं तुम्हारे साथ मसिर जाऊँगा। दूसरे शब्दों में, उपस्थिति का धर्मशास्त्र उस आश्वासन और भरोसे के स्थान पर आने में बहुत महत्वपूर्ण है जो परमेश्वर ने कुलपिताओं और उनके परिवारों के लिए प्रकट किया है। और वह कहता है, और मैं तुम्हें निश्चिंता रूप से फिर से वापस लाऊँगा।

और यूसुफ का अपना हाथ आपकी आँखें बंद कर देगा। खैर, यह वास्तव में होता है। कहानी समाप्त होगी, हमें दिखाएगी कि यह कैसे होता है जसि तरह से यूसुफ अपने पति को मसिर लाने की योजना बनाता है और तैयारी करता है।

और उसके पति की मृत्यु हो जाती है। याकूब मसिर में मर जाता है। और यूसुफ उसकी वापसी की देखरेख करता है, जैसा कि अध्याय 50 में बताया गया है, एक वादा कि याकूब के साथ-साथ यूसुफ भी वापस आएगा।

यह जोशुआ के आखिरी अध्याय में घटित होता है, जहाँ यूसुफ को दफनाया जाता है। और जहाँ हम जैकब के मामले में पाएंगे, उसकी हड्डियाँ वापस कर दी जाती हैं, उसका शरीर वापस कर दिया जाता है। जैकब के अनुरोध के अनुसार, यूसुफ उसे पारिवारिक अंतिम संस्कार क्षेत्र, कबरस्तान और मथिला की गुफा में दफनाता है।

इसलिए, स्पष्टीकरण के लिए, उत्पत्ति के समापन से पहले याकूब को दफनाया जाएगा। फरि बाद में यूसुफ को दफनाया जाएगा। उसे मसिर छोड़ने वाले नरिवासियों के साथ ले जाया जाएगा और अंततः कनान में नविस करेगा।

इसलिए, हम पाते हैं कि वह बेरशेबा को छोड़ देता है, और अपने साथ ले जाता है। हमें सातवीं आयत के अंत में बताया गया है कि उसकी सारी संतानें वहाँ हैं। फरि से, समावेशी, वचिर पूरे परिवार के जीवित रहने का है। जसिके बाद, हमारे पास एक वंशावली है।

यह महत्वपूर्ण है क्योंकि हम पहले ही समावेशिता के इस वषिय को देख चुके हैं। इस वंशावली में यही बात ध्यान में रखी गई है, याकूब के बेटे से पैदा हुए बेटों की सूची। इसलिए, आयत आठ से 27 में, हमारे पास मसिर में याकूब के वंशज हैं।

यह सूचीकरण बताता है। यह वादे की पूर्ति, परिवार के वसितार और परिवार का क्या होगा, यह दर्शाता है। और मसिर में उनके नरिवासिन के दौरान एक बड़ी भीड़ होगी - वास्तव में, इतनी अधिक संख्या में कि वे फरिन की नजर में एक खतरा बन गए।

और वह नरसंहार की नीतिलागू करेगा। इसलिए, कुछ लोग संकेत देंगे, और मुझे लगता है कि इसके लिए औचित्य है, कि वास्तव में 70 को बहुत अधिक नहीं माना जाएगा। वास्तव में, यह एक छोटी संख्या थी, लेकिन भगवान के आशीर्वाद के कारण यह संख्या बहुत बढ़ गई।

लेकिन मुझे लगता है कि मुद्दा यह है कि पूरे इजराइल के पूर्वज, यानी 12 जनजातियों के पति, सभी मसिर में पाए जाते हैं। तो, आपके पास उस तरह का असतत्व, सुरक्षा, प्रावधान है, और फरि आधार, परिवार के एक महान प्रसार की शुरुआत है। तो यहाँ एक अच्छी व्यवस्था है।

हमारे पास सबसे पहले लआि, उसकी संतान, उसकी कुंवारी जलिपा, राहेल और फरि बलिहा के नाम हैं। हर एक के बाद एक संख्या दी गई है। इसलिए, उदाहरण के लिए, यदि आप इन सभी संख्याओं को जोड़ते हैं, तो आप श्लोक 15 में 33 से शुरू करते हैं, श्लोक 18 और 16, श्लोक 22 और 14, और फरि श्लोक 25 में एक और 7 से। सामूहिक रूप से, तब आपके पास 70 होते हैं।

यहाँ क्या चल रहा है, इसका स्पष्टीकरण है। श्लोक 26, उन संख्याओं के संदर्भ में, 70 या 66। और यहाँ इसका स्पष्टीकरण है कि यह क्या है, दो संख्याओं में अंतर का स्पष्टीकरण है।

याकूब के साथ मसिर गए सभी लोग, जो उसके परत्यक्ष वंशज थे, उसके बेटे की पत्नियों को छोड़कर, कुल 66 लोग थे। यूसुफ के मसिर में पैदा हुए दो बेटों के साथ, याकूब के परिवार के सदस्य, जो मसिर गए थे, कुल मिलाकर 70 थे। इसलिए, लेखक 66 और 70 के बीच के अंतर को समझा रहा है।

तो, मुझे लगता है कि यह होना ही चाहिए, और इसका सबसे अच्छा स्पष्टीकरण वास्तव में पहले पाया जाता है। यदि आप अध्याय 46 में श्लोक 12 को देखें, तो यह ऊर और ओनान के बारे में बात करता है, जो कनान देश में मर गए थे। इसलिए, यदि आप अपने 70 को लेते हैं और उन्हें घटाते हैं, तो आप 68 पर पहुंच जाते हैं।

और फरि, श्लोक 19 में, यह कहा गया है कि राहेल ने यूसुफ और बनियामीन को जन्म दिया। अब, मसिर में, देखिए, मसिर में, यूसुफ से दो बच्चे पैदा हुए, मनश्शे और एप्रैम। इसलिए, यदि आप उन्हें नहीं गनिते हैं, तो आप 68 से 66 पर चले जाते हैं।

मुझे लगता है कि 66 और 70 के बीच के अंतर की शायद यही सबसे लोकप्रिय व्याख्या है। और इसलिए यह हमें तीसरे प्रमुख व्यक्ति, यहूदा तक ले आता है। और इसलिए, यदि आप अध्याय के अंत तक श्लोक 28 को देखें, तो हम तीर्थयात्रा के विवरण से शुरू करने जा रहे हैं।

और इसलिए, यहाँ हमारे पास यूसुफ का चरित्र उद्धारकर्ता के रूप में है। वह परिवार का उद्धारकर्ता है। और इसलिए, अध्याय 46:28 में, अध्याय के अंत तक, हमारे पास यूसुफ का चरित्र है, जो मध्यस्थ है।

वह वही है जो फरौन से पहले आया था। और फरि अध्याय 47, श्लोक 1 से श्लोक 12 तक आगे बढ़ते हुए, हम देखते हैं कि यूसुफ के भाई फरौन से पहले आए, और फरौन से पहले याकूब भी। तो फरि हम फरौन का फरि से उदय देखते हैं।

और मुझे लगता है कि इसका महत्व काफी स्पष्ट है। हम अध्याय 46, श्लोक 28, और अध्याय 47, श्लोक 12 में इन महत्वपूर्ण श्लोकों को देखेंगे, साथ ही इन विचारों को भी देखेंगे। और फरि यह है कि इस्राएलियों ने स्वीकार किया कि वे वदेशी, प्रवासी हैं, और यह उत्पत्ता के माध्यम से सच रहा है और ऐसा ही होगा कि ये लोग, हालांकि उन्हें गोशेन प्राप्त हुआ है, और वे वहाँ पनपेंगे, वे बहुत अच्छी तरह से जानते हैं, यह हमारी मातृभूमि नहीं है।

और इसलिए यह भविष्य की ओर देखने वाली सोच की ओर उन्मुखीकरण है। याकूब की कहानी में आप उसके वंश और गोशेन में उसके परिवार की समृद्धि को देखते हैं, और फरि यूसुफ खुद अपनी मृत्यु के बाद लौटता है, और उसे वादा किए गए देश में मकपेला में दफनाया जाता है। और इसलिए, याकूब की कहानी इस्राएल की कहानी है।

इस्राएल के इन 12 कबीलों को नीचे लाया गया है, उन्हें जीवित रहने की जगह पर लाया गया है, वे गोशेन में पनपते हैं, इसे धन्य, सुंदर, सबसे अच्छी भूमि कहा जाता है। और फरि वे दासता की भूमि में गरि जाते हैं, इसे मसिर कहा जाता है। और अंततः वे उभरेंगे, वे कनान की भूमि पर प्रवास में वापस आएंगे, और वहाँ नविस करेंगे, कनान में एक स्थायी नविस।

तो, आप देख सकते हैं कि इससे पहले जो कुछ भी हुआ है, वह राष्ट्र की तैयारी में सहायक रहा है। इसलिए, जब हम उत्पत्ति के वृत्तांत पढ़ते हैं, तो हमें पेंटाट्यूक में पाए जाने वाले हबिरू लोगों की कहानी की समग्रता के संदर्भ में सोचना चाहिए। तो, ओइए 28 से शुरू करें।

अब याकूब ने यहूदा को गोशेन की दशिया-नरिदेश प्राप्त करने के लिए यूसुफ के पास भेजा। अब, यहूदा की प्रमुखता क्यों दी गई है? क्योंकि जैसा कि हम देखेंगे, संकेत है, और फरि अध्याय 49 में, यहूदा को दिए गए आशीर्वाद में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि यहूदा के गोत्र से शाही घराना आएगा जैसा परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों के लिए ध्यान में रखा है। यह राजा दाऊद की ओर इशारा करता है, जो यहूदा के गोत्र का है, और अंततः प्रभु यीशु मसीह की ओर, जैसा दाऊद के पुत्र के रूप में पहचाना जाता है और जो शाही व्यक्तियों के घराने का है।

फरि यूसुफ अपने पिता इस्राएल के सामने आया। इसलिए, हम आयत 29 में पाते हैं कि इन सभी वर्षों के अलगाव के बाद यूसुफ और याकूब का फरि से मिलन हुआ। और उन्होंने एक दूसरे को गले लगाया, और वे लंबे समय तक एक दूसरे के साथ रहे।

ऐसा लगता है मानो वे एक दूसरे को जाने नहीं देते, कहीं ऐसा न हो कि वे उस अलगाव का अनुभव करें जैसा वे पहले से ही जानते थे। इसलिए, श्लोक 30, अब मैं मरने के लिए तैयार हूँ, इस्राएल कहता है, वह याकूब है, क्योंकि मैंने खुद देखा है कि तुम अभी भी जीवित हो। खैर, असल में, याकूब जो कह रहा है वह यह है कि चूंकि विह यूसुफ के साथ फरि से मलि गया है, वह जानता है कि विह जीवित है, उसने उसे देखा है, तो वह, मुझे लगता है, यह दर्शाता है कि भगवान ने उसके जीवन को संरक्षित किया है ताकि विह अपने बेटे के साथ इस समय का आनंद ले सके।

और इसलिए अब वह मरने के लिए तैयार है। यह मुझे लूका अध्याय 2 में शमिोन की याद दिलाता है, जहाँ आपको वह अवसर मिला जब यूसुफ और मरियम शशि यीशु को मंदिर में ले गए। और वहाँ, बच्चे का खतना होता है, और कानून के अनुसार, और वहाँ शमिोन है, एक वृद्ध व्यक्ति जो संदर्भित करता है कि कैसे भगवान उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर दे रहे हैं।

हम इसे लूका अध्याय 2 में उठाएँगे। मेरी बात मानिए। श्लोक 28 में, शमिोन ने शशि यीशु को अपनी बांहों में लिया और परमेश्वर की स्तुति करते हुए कहा, हे प्रभु, जैसा कि आपने वादा किया है, अब आप अपने सेवक को शांति से वादा कर सकते हैं। वह अब मरने के लिए तैयार है।

उसने प्रभु के उद्धार को देखा है, क्योंकि मेरी आँखों ने तेरा उद्धार देखा है, जैसा तुने सभी राष्ट्रों के सामने तैयार किया है, अनपेक्षितियों के लिए प्रकाश के लिए एक ज्योती और तेरे लोगों इस्राएल की महिमा। तो यह निश्चिती रूप से हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर यीशु को दुनिया में लाने में क्या काम कर रहा है, इस्राएल का उद्धारकर्ता और सभी राष्ट्रों का उद्धारकर्ता।

और यह हमें सभी लोगों के लिए परमेश्वर के वचनबद्ध आशीर्वाद की याद दिलाएगा। फरि हम फरौन को उसके परिवार के व्यवसाय के बारे में सपष्टीकरण पाते हैं, और वह पद 32 में कहता है, देखो, वह यहाँ भूमि को तोड़ रहा है, फरौन को तैयार कर रहा है। पुरुष चरवाहे हैं ; वे पशुओं की देखभाल करते हैं, और वे अपने झुंड और गाय-बैल और अपनी सारी संपत्ति साथ लाए हैं।

फरि से, समावेशी का वचन। जब फरौन आपको बुलाता है और पूछता है, तो वह अपने भाइयों से कह रहा होता है, तुम्हारा पेशा क्या है? तुम जवाब दोगे कि तुम्हारे सेवक बचपन से ही पशुओं की देखभाल करते आए हैं, ठीक वैसे ही जैसे हमारे पूर्वज करते थे। और अब यह महत्वपूर्ण बंद है।

फरि, आपको गोशेन के कषेत्र में बसने की अनुमति दी जाएगी। आप देख सकते हैं क्यूसुफ ने यह सुनिश्चित करने के लिए कई कदम उठाए हैं कि गोशेन उसके परिवार के हाथों में आ जाए क्योंकि गोशेन को सबसे धन्य भूमि, सबसे उपजाऊ भूमि, सबसे अच्छी भूमि के हिससे के रूप में देखा जाता है। और साथ ही, यह उन्हें कुछ अलगाव भी देगा, जैसा कि अध्याय 46 में यह अंतिम खंड कहता है।

क्योंकि मिस्र के लोग सभी चरवाहों से घृणा करते हैं। इसलिए, वहाँ अलगाव की नीति होगी। और यह फलदायी साबित होने जा रही है क्योंकि इसका मतलब यह होगा कि हिब्रू लोगों के पास अपना कषेत्र होगा और वे अपनी पहचान बनाए रखेंगे और मिस्र के लोगों के साथ अंतरजातीय विवाह के माध्यम से मिस्रि नहीं होंगे और परणामस्वरूप वे मिस्र की संस्कृति और उसके देवताओं को अपनाने के लिए प्रलोभित नहीं होंगे।

तो, यहाँ जो बात ध्यान में रखी जा रही है वह यह है क्यूसुफ के साथ मेल-मिलाप के बाद, श्लोक 31 में, वह अपने भाइयों को शकतशाली फरौन के सामने क्या कहना है, इसके लिए तैयार करता है। फरि, अध्याय 47 में, हमारे पास श्लोक 1 से 6 हैं। यूसुफ ने जाकर फरौन को 1 से 6 तक बताया, मेरा भाई यहाँ है, मेरा पति यहाँ है। और इसलिए, अब एक बैठक है।

फरौन अध्याय 47 में भाइयों की जाँच करने जा रहा है। तो यूसुफ ने पाँचों को क्यों चुना? शायद किसी और मौके पर इस पर चर्चा की जा सकती है। उसने अपने पाँच भाइयों को चुना और उन्हें फरौन के सामने पेश किया।

यह श्लोक 2 में पाया जाता है। तो, फरौन जानना चाहता है, मुझे बताओ कि तुम क्या करते हो। और वे बताते हैं कि वे चरवाहे हैं। वे बताते हैं कि वे इस महान अकाल के कारण कनोन छोड़कर चले गए।

और फरि वे गोशेन में एक भूमि का अनुरोध करते हैं, श्लोक 5. फरौन ने यूसुफ से कहा, तुम्हारे पति और तुम्हारे भाई तुम्हारे पास आए हैं, और मिस्र की भूमि तुम्हारे सामने है। अपने पति और अपने भाइयों को देश के सबसे अच्छे हिससे में बसाओ। इसलिए, यूसुफ ने फरौन के घराने और पूरे देश या मिस्र के देश के लिए जो कुछ किया है, उसके कारण मुझे लगता है कि धन्यवाद, वह कहता है, जो आप चाहते हैं उसे चुनें।

और ऐसा लगता है कि गोशेन वही है जो आप चाहते हैं। और इसलिए, वास्तव में, न केवल मैं उन्हें एक कषेत्र दूंगा, बल्कि मैं उन्हें अपने शाही पशुधन का प्रभार देकर मिस्र की संस्कृति में आगे बढ़ने का अवसर भी दूंगा।

इसलिए , यह वास्तव में पुस्तक के शेष भाग में नहीं बताया गया है।

लेकिन मुझे लगता है कि मुद्दा यह है कि फरिश्तों के पक्षधर हैं। अब, हम जो छंद 7 से 12 में पाते हैं वह याकूब होगा जो छंद 7 से 12 में फरिश्तों के सामने आता है। अब, यह इन दोनों के बीच एक अद्भुत संवाद है।

यह बहुत उल्लेखनीय है कि हमारे पास यह वृद्ध याकूब है और कैसे फरिश्तों वास्तव में याकूब के प्रति एक विनिमय भावना व्यक्त करता है। ध्यान दें कि श्लोक 7 में क्या कहा गया है। याकूब ने फरिश्तों को आशीर्वाद दिया। और फिर एक संवाद है।

और फिर श्लोक 10 में, यह कहा गया है कि याकूब ने फरिश्तों को आशीर्वाद दिया। अब, यहाँ संकेत यह है कि याकूब फरिश्तों से बड़ा है। और यह इस्राएलियों, पूरे इस्राएल, सभी 12 जनजातियों के पिता याकूब के बीच के रिश्ते को समझने का एक उल्लेखनीय तरीका है।

यहाँ फरिश्तों के सामने, और वह फरिश्तों को आशीर्वाद देता है। आशीर्वाद का यह भाव ध्यान में है। और यह याद रखना बहुत महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर का आशीर्वाद अब्राहम के वंशजों, याकूब, इस्राएल के माध्यम से सभी राष्ट्रों के लिए है।

और इस्राएल का कट्टर दुश्मन, वह राष्ट्र जो इस्राएल के वंशजों को गुलाम बनाएगा, यहाँ परमेश्वर से आशीर्वाद प्राप्त करता है जो मिस्र और सभी राष्ट्रों के लिए था। यद्यपि इस्राएलियों का सम्मान करना जारी रखेंगे, जो वे करने में विफल रहे। अब, आइए श्लोक 9 में इस संवाद को देखें, जहाँ याकूब 130 वर्षों तक अपनी तीर्थयात्रा के बारे में बात करता है।

वह कहता है, "मेरे साल कम और कठिन रहे हैं, और वे मेरे पूर्वजों की तीर्थयात्रा के वर्षों के बराबर नहीं हैं। और वह अब्राहम जितना लंबा नहीं जीता है, उदाहरण के लिए। हमें श्लोक 28 में बताया गया है कि याकूब मिस्र में 17 साल तक रहा, और उसके जीवन के वर्ष 147 थे।

अब्राहम 175 साल तक जीवित रहे। लेकिन आप कल्पना कर सकते हैं कि जब ये कहानियाँ मिस्र में निवासित हब्रू लोगों के गुलामों को सुनाई गईं, तो यह कतिना प्रभावशाली और उत्साहजनक रहा होगा। अगर वे परमेश्वर के वादों पर अपना विश्वास और भरोसा रखते, तो मुक्ति अवश्य मिलती।

और इस्राएलियों को यह समझना चाहिए कि परमेश्वर के साथ उनका भी एक स्थान है। वे अन्य राष्ट्रों की तरह नहीं हैं क्योंकि परमेश्वर का एक उच्च उद्देश्य है, उनके लिए एक महान उद्देश्य है जिसे उन्हें पूरा करना है यद्यपि अपने दुखों के बीच भी, वफादार बने रहेंगे। इसलिए विशेष रूप से यद्यपि आप पैटाट्यूक के माध्यम से आगे बढ़ेंगे, और उस पीढ़ी के लिए जो जंगल से बच गईं और भूमि में प्रवेश किया, तो यह देखना उनके लिए कतिना बड़ा प्रोत्साहन रहा होगा कि परमेश्वर कुलपिताओं और उनके पूर्वजों के जीवन में क्या कर रहा है।

इसलिए, वह श्लोक 19 में आगे कहता है कि याकूब ने फरौन को आशीर्वाद दिया और उसके सामने से चला गया। तो यह कथावचक है। अब, हम इसे वहाँ से शुरू करना चाहते हैं जहाँ हमें वह वशिष्ट स्थान मलिता है जहाँ उन्होंने नविस कयिा था।

फरि से, इसे भूमिका सबसे अच्छा हसिसा, रामसेस का जलिा कहा जाता है। रामसेस एक कषेतर और एक शहर था जो आज के काहरि के रूप में जाने जाने वाले स्थान से 65 मील उत्तर-पूर्व में बना था। इसलिए चीजे व्यवस्थिति हो रही हैं, और चीजे प्रदान की जा रही हैं।

अकाल की गंभीरता के बावजूद यह बहुत आशाजनक लग रहा है। अब हम अध्याय के अंत से श्लोक 13 की ओर मुड़ते हैं, और इसका सम्बन्ध यूसुफ की बुद्धि से है। और उसे नश्चिति रूप से फरौन ने इस आधार पर चुना था कि यूसुफ ने उसके सपनों की व्याख्या कैसे की थी।

वह एक बुद्धिमिान व्यक्ता था। उस पर ईश्वर या देवताओं की कृपा थी, और वह फरौन की नजर में बहुत मूल्यवान व्यक्ता था। और बुद्धिमिानी के इस सबूत का एक हसिसा उसका प्रशासन है।

यही बात सबसे बुद्धिमिान राजा सुलैमान के बारे में भी कही जा सकती है, और कैसे उसके राज्य, उसके प्रशासन को संगठित करने में उसकी बुद्धि का वर्णन कयिा गया है। इसलिए प्रशासन और समृद्धि, संपत्ति और उस सकारात्मक वावरण की चीजे उन लोगों का मूल्यांकन करने में महत्वपूर्ण हैं जिन्होंने बहुत अधिक बुद्धि और मान्यता का प्रदर्शन कयिा। तो आइए हम उसके प्रशासन के शुरुआती भाग से शुरू करें, जो हमें आयत 13 से 19 में मलिता है।

और हम जो खोज करने जा रहे हैं वह यह है कि अकाल के चलते प्रगति में तीन चरण हैं, और यूसुफ ने जसि तरह से प्रशासन कयिा है, उसके परिणामस्वरूप लोग कैसे जीवति रहते हैं, न केवल बहुतायत के वर्षों में बल्कि यिहाँ सबसे गहरे अकाल के वर्षों में भी। इसे उठाते हुए, फरि, श्लोक 14 में, यूसुफ ने मसिर और कनान में मलिने वाले सभी पैसे इकट्ठा कयिे, जो कि उनके द्वारा खरीदे जा रहे अनाज के भुगतान के लिए थे, और वह इसे फरौन के महल में ले आया। इसलिए, वह एक मध्यस्थ, अपने परिवार के लिए मध्यस्थ, और लोगों और फरौन के बीच मध्यस्थ के रूप में जारी है, जसिके लिए वह है या जसिके लिए वह बाध्य है।

तो यह पहला चरण होगा, लोगों को उनके पैसे से अनाज खरीदकर उपलब्ध कराना। और वे खुद को एक नरिशाजनक स्थिति में पाते हैं। मुझे लगता है कि हमारे लिए यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि ये असाधारण परिस्थितियाँ थीं।

और इसलिए, लोग कहते हैं, हम आपकी आँखों के सामने कयों मरें? हमारा पैसा खर्च हो चुका है। इसलिए, वे समझते हैं कि उन्हें भोजन की जरूरत थी, उनके पास कषणकि असत्तिव था, और अब वे दूसरे चरण में चले जाते हैं, श्लोक 16। इसका संबंध उनके पशुधन और उनकी सारी संपत्तिको बेचने से है।

पद 16 में, यूसुफ ने कहा, फरि अपने पशुओं को लाओ, और मैं तुम्हारा भोजन बेचूंगा, तुम्हारा भोजन तुम्हारे पशुओं के बदले में कयोंकि तुम्हारा पैसा चला गया है। इसलिए, यूसुफ को एक प्रदाता के रूप में देखा जाता है, जो लोगों को सुरक्षित रखेगा। अब, वे अपने सभी

पशुधन खो देते हैं, लेकिन उन्हें किसी तरह से आदान-प्रदान करना होगा, हमें बताया गया है, उन्हें अपने पशुधन का आदान-प्रदान करना होगा ताकि वे जीवित रह सकें ।

मुझे लगता है कि आप इसे एक नरिशाजनक स्थिति के रूप में देख सकते हैं कि यूसुफ उनका फायदा उठा रहा है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह उनका दृष्टिकोण था। उनका दृष्टिकोण यह था कि नि केवल वह उनके अस्तित्व के स्रोत को नियंत्रित करता था, बल्कि वह इसके साथ कंजूस भी नहीं था। और वह करूर नहीं था क्योंकि वह उनकी जरूरतों को पूरा कर रहा था और साथ ही फरौन के घराने के प्रति ज़िम्मेदारी दिखा रहा था।

तो, उस वर्ष के बाद, हम श्लोक 18 में जाते हैं। जब वह वर्ष समाप्त हो गया, तो वे अगले वर्ष उसके पास आए और कहा, हम जो कुछ भी हमारे साथ हो रहा है, उससे छपि नहीं सकते। हमारे प्रभु के लिए हमारे शरीर और हमारी भूमि के अलावा कुछ भी नहीं बचा है।

तो, तीसरा चरण उनकी गुलामी का होगा। वे अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक अनाज प्राप्त करने के लिए खुद को फरौन के गुलाम के रूप में देने के लिए तैयार हैं। दूसरे शब्दों में, वे काम करने जा रहे हैं।

उनके पास देने के लिए बस इतना ही है। श्लोक 19, हम आपकी आँखों के सामने क्यों नाश हों? हम और हमारी ज़मीन भी। हमें और हमारी ज़मीन को खाने के बदले में खरीद लें, और फिर हम फरौन के गुलाम बन जाएंगे।

यही एकमात्र तरीका है जिससे वे जीवित रह सकते हैं। वे इतना ही कहते हैं: हमें बीज दो ताकि हम जीवित रहें और मरें नहीं और भूमि उजाड़ न हो जाए। दूसरे शब्दों में, इस तथ्य के आधार पर कि आपके पास ऐसी आबादी नहीं है जो भूमि को बनाए रखने में कुछ नगिरानी रखती हो, भले ही यह बहुत कम हो क्योंकि यह बहुत बड़ा अकाल है, यह जंगली जंगल नहीं बनेगा।

मुझे लगता है कि यहाँ यही बात ध्यान में रखी जा रही है। अब, यह कहा जा सकता है कि ये लेन-देन हमारे लिए अपमानजनक हैं, क्योंकि लोगों को दासता में जाना पड़ा। लेकिन सबसे पहले, जोसेफ के संदर्भ में, हमें यह याद रखना होगा कि ये लेन-देन उसे व्यक्तिगत रूप से समृद्ध नहीं कर रहे हैं।

वे राज्य को समृद्ध बना रहे हैं। और साथ ही, हमें यह भी याद रखना होगा कि यह एक संकट है। यह स्थायी आधार पर नहीं होने वाला है।

अकाल समाप्त होने वाला है। लोगों के वापस अपने देश लौटने की संभावनाएँ होंगी। और मुझे लगता है कि यही बात हमें श्लोक 20 से 31 में दिए गए निर्देशों में मिलती है, जिसका कुछ हिस्सा मसिर के पुजारियों को स्वीकार करने से जुड़ा था।

मुझे लगता है कि पुजारी और यह एक ऐसी चीज है जिसे हम बाइबिल से इतर मसिर की संस्कृति से जानते हैं, और आपको याद होगा, यह हबिरू लोगों के मामले में भी है। परमेश्वर ने लेवियों, याजक जनजात को भूमि नहीं दी, लेकिन उन्हें अनय जनजातियों द्वारा प्रदान किया गया। और उन्होंने याजकों और उनके परिवारों और उनके बचे हुए लोगों के लिए प्रावधान किया।

और परमेश्वर ने उन्हें 48 शहर और उनके आस-पास के इलाके दिए। तो अब हम आयत 21 पर आते हैं, और यूसुफ ने लोगों को मसिर के एक छोर से दूसरे छोर तक गुलाम बना दिया। और एक वैकल्पिक पाठ है जो आपको अपने संस्करण में मिला सकता है।

हालाँकि, ज्यादातर संस्करण हबिर आयत 21 का अनुवाद NIV की तरह ही करेंगे, जिसमें लोगों को सेवा में रखा गया है। हालाँकि, हबिरू में बदलाव को समझना संभव है। यह बहुत मामूली है, लेकिन इसका अर्थ काफी अलग है।

इसका अनुवाद किया जाएगा, और उसने लोगों को शहरों में स्थानांतरित कर दिया। किसी भी स्थिति में, भूमि फिर से हो जाती है। उसे किसी न किसी रूप में कामगारों की आवश्यकता होगी, और ऐसा लगता है कि यह आबादी है।

फिर हमें पुजारियों के अपवाद के बारे में बताया गया। और पाँचवाँ अपवाद भी है, वह लोगों से कहता है। यहाँ बीज है।

हम देखेंगे कि अकाल के खतम होने के बाद, अगर लोग भवषिय की फसल के लिए बीज नहीं बोएंगे, तो आप देख सकते हैं कि ज़मीन उजाड़ और अनुत्पादक हो जाएगी। इसलिए इस पर काम करना होगा। इसलिए, फसल का पाँचवाँ हिससा फर्रिन को दिया गया।

अब, यहाँ पद 25 में लोगों का दृष्टिकोण है। और मुझे लगता है कि यह उस तरीके से महत्वपूर्ण है जिससे हम फर्रिन, यूसुफ और लोगों के बीच के रश्ते को समझते हैं। लोग समझते हैं कि यूसुफ और उसके परमेश्वर ने उनकी देखभाल की है।

इसलिए, पद 25 में यूसुफ से कहा गया है, तुमने हमारी जान बचाई है। इसीलिए मैंने इस अंतिम भाग के बारे में बात की है, अध्याय 46, पद 28 से शुरू होकर, अध्याय 47 तक, जो यह है कि यूसुफ परिवार का उद्धारकर्ता है। लेकिन उससे परे, वह दुनिया का उद्धारकर्ता है।

हम अपने प्रभु की नजर में कृपा पाएँ, हम होंगे, देखिए, वे सुवेच्छा से समझते हैं कि बिचने की संभावना है। तो, फिर जो कुछ भी पैदा होता है उसका पाँचवाँ हिससा फर्रिन का होने से संबंधित यह कानून है। तो, फिर यह आखिरी हिससा, मैं चाहूँगा कि हम देखें।

लेकिन ऐसा करने से पहले, मैं यह सोचने से खुद को नहीं रोक सकता कि याकूब के वंशज, याकूब के घराने के वंशज के बारे में मैं क्या पाता हूँ। ऐतिहासिक रूप से, यही हम यूसुफ के साथ पाते हैं। वह एक उद्धारकर्ता है।

और फिर बाद में हम पाएँगे कि यहूदा से एक महान शाही व्यक्ति आएगा जो परमेश्वर के मामले में, और उन सभी लोगों के बीच मध्यस्थ भी होगा जो मध्यस्थ, यीशु मसीह का संदेश सुनेंगे, अपने पापों का पश्चाताप करेंगे, यीशु कौन है, इसकी पहचान में अपना विश्वास और भरोसा रखेंगे, और यीशु के वादे और यीशु के जीवन की घटनाएँ, क्रूस, कब्र, पुनरुत्थान, और फिर यीशु का स्वर्गारोहण और

पवतिर आत्मा का भेजा जाना, जो यीशु ने जो पूरा किया और घोषित किया, उसकी पुष्टि करता है। तो, मैंने अब एक अंश पढ़ा जो शायद आपको याद न हो। 1 यूहन्ना 4, यह इस छोट्टे से पत्र में है, सुसमाचार प्रचारक यूहन्ना, 1 यूहन्ना 4, पद 14।

और यही बात यीशु मसीह के अनुयायी यूहन्ना ने तीन साल तक उनके साथ रहकर कही, और हमने देखा और गवाही दी कि पिता ने अपने बेटे को दुनिया का उद्धारकर्ता बनने के लिए भेजा है। अब्राहम परिवार का वादापूर्ण आशीर्वाद यीशु मसीह के माध्यम से साकार होता है। इसलिये, श्लोक 27 और अध्याय के अंत तक, श्लोक 31 में, हम वादे की प्रतीति देखते हैं।

वे गोशेन में बहुत फलदायी हुए और बढ़ गए। और फिर हमें याकूब की मृत्यु के बारे में बताया गया। यानी याकूब को पहले से ही पता था।

और इसलिये, याकूब की नजर कनान लौटने पर टिकी है। याद कीजिए कि उसने पदाना अराम में 20 साल बिताए थे। इससे पहले उसे निवासित किया गया था।

अब, उसे और उसके परिवार को फिर से निवासित कर दिया गया है। पहले मामले में, उसकी बर्बादी के कारण और कैसे उसने एसाव के साथ बुरा व्यवहार किया और भाग गया। और अब, अकाल के कारण, उसकी नजर मकपेला पर है, जो अब्राहम और इसहाक की कब्रगाह है।

इसलिये उसने अपने बेटे से कहा, "मुझे मसिर में मत दफनाना। लेकिन जब मैं अपने पतिओं के पास सौ जाऊँ, तो मुझे मसिर से बाहर ले जाना और जहाँ वे दफनाए गए हैं, वहाँ मुझे दफनाना। मैं वही करूँगा जो तुम कहोगे," उसने कहा।

और वह इससे संतुष्ट नहीं है। उसने कहा, मुझसे शपथ लो। यूसुफ ने उससे शपथ ली, और इस्राएल ने उसकी लाठी पर झुककर उसकी आराधना की।

और मुझे लगता है कि हिम हबिरू पाठ को इसी तरह समझते हैं। इसका अनुवाद करना संभव है। इजराइल अपने बसितर के सरिहाने झुक गया।

बेशक, यह सुंदरभ के साथ-साथ उसकी आराधना की अभिव्यक्ति के अनुरूप होगा। जैसा कि आप जानते हैं, इस्राएल याकूब या याकूब इस्राएल ने मुख्य बटुओं पर आराधना व्यक्त की है। यह सुनकर आश्चर्य नहीं होता कि उसका भविष्य परमेश्वर के हाथों में होगा और परमेश्वर, यूसुफ के माध्यम से, उसे उस वादा किए गए देश में ले जाएगा।

यह आश्चर्यजनक है कि इस तरह के विश्वास की अभिव्यक्ति इसके पीछे हर कारण है। यह मानने के लिए हर कारण है कि गोशेन में रहने वाले लोग समृद्ध हैं।

उस देश में वापस लौटने का कोई कारण नहीं था, बल्कि परमेश्वर का वादा था। याकूब ने उस पर विश्वास किया। उसने देखा था कि कैसे परमेश्वर उसे पददन अराम से बेटेल वापस लाया था।

वह बेरशेबा की यात्रा पर गया था जहाँ उसने पूजा की थी। भगवान ने उससे वादा किया था, तुम वापस आओगे। मैं यह आश्वासन देने जा रहा हूँ।

इसलिए इब्रानियों के अध्याय 11, आयत 21 में इब्रानियों के लेखक ने यह कहा है। विश्वास से, याकूब ने मरते समय यूसुफ के प्रत्येक पुत्र को आशीर्वाद दिया। हम इसे अध्याय 48 में पाएंगे।

अगली बार और पूजा करें। और यहाँ हमारी कविता है जब वह अपने कर्मचारियों के शीर्ष पर झुक गया। खैर, यह वास्तव में होगा।

यह अध्याय 49 में याकूब की मृत्यु के दौरान घटित होता है; इसे श्लोक 29 में वर्णित किया गया है। और फिर अध्याय 50 में, हम याकूब की मकपेला के पास वापसी देखेंगे। यह श्लोक 12 और उसके बाद के अध्याय 50 में है।

और फिर, जैसा कि मैंने पहले कहा, हमारे पास यूसुफ की मृत्यु और उसके पिता द्वारा उसके भावी वंशजों से किया गया वादा है। वापस आओ, मुझे वादे के देश में वापस लाओ। अगले सत्र में, अध्याय 48 से 50 याकूब की कहानी के अंतिम अध्याय होंगे, लेकिन पूरी कविता के भी।

परमेश्वर यह सुनिश्चित करने जा रहा है कि उद्धार, समृद्धि और सुरक्षा के उसके वादे और इस्राएल की आशा परमेश्वर पर व्यर्थ न खर्च हो। वह उद्धारकर्ता होगा, जैसा कि हम यूसुफ के साथ पाते हैं, जो अपने इकलौते पुत्र, पिता के पुत्र, यीशु मसीह के माध्यम से दुनिया को उद्धारकर्ता है।

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज और उत्पत्तिका पुस्तक पर उनकी शक्ति है। यह सत्र 24 है, यूसुफ और याकूब का पुनर्मिलन, उत्पत्तिका 46-47।